"Knowledge Scholar"
An International Peer Reviewed E-Journal Of Multidisciplinary Research
Volume: 02, Issue: 04, July-August 2015 *eISSN NO. 2394-5362*
Impact Factor (IIFS) - 0.776

शिक्षा में व्यक्ति की अभिरुचि

रसाळ अर्चना मुरलीधर
असिस्टेंट प्रोफेसर
समाजशात्र विभाग
बलभीम कॉलेज,
बीड, महाराष्ट्र, भारत

Rasal Archana Murlidhar
Assisttant Professor
Dept. of Sociology
Balbhim College
Beed, Maharashtra, India

प्रत्यक व्याक्त एक शिशु के रूप में कुछ पाशविक प्रवृत्तियाँ लेकर असहाय तथा दीन-हीन अवस्था में इस व्यापक विश्व में प्रविष्ट होता हे, परन्तु शिक्षा ही एक ऐसा, तत्व है, जिसके द्वारा वह अपनी प्राशविक प्रवृत्तियाँ का शोधन तथा मागान्तीकरण करते हुए अपने को एक मानव व सामाजिक प्राणी बनाने का सौभग्य प्रापत करता है।

संसार में ऐसे बहुत कम व्यक्ति है, जिन्हें शिक्षा में किसी प्रकार की रूचि न हो, क्योंकि शिक्षा के बिना मानवजीवन भारस्वरूप हो जाता है। जैसे पौधो का विकास कृषि द्वारा एवं मनुष्य का विकास शिक्षा द्वारा होता है। और जीस प्रकार शारीरिक विकास के लिए भोजन का महत्त्व है, उसी प्रकार सामाजक विकासक लिए शिक्षा का।

अभिरूचि या अभिवृत्ती का तात्पर्य किसी कार्य विशेष की ओर झुकाव या लगाव से है, किसी कार्य में महारत हासिल करने के लिए व्यक्ति में विद्यमान योग्यता या कुशलता ही पर्याप्त नहीं होती है, अपितु उसकी ओर झुकाव भी हाना चाहिए, अर्थात मनसा, वाचा, कर्मणा उसकी सिध्दि हेतु अनवरत प्रयास करना चाहिए कुछ लोग तो ऐसे भी हाते है, जो लक्ष्य विशेष को प्रापत तो करना चाहते है, परन्तु प्रयास नहीं करते या करते भी हैं, तो थोड़ी भी परेशानी आई कि बीच में ही छोडकर दूर खड़े हो जाते है। ऐसा प्रयास नहीं होना, चाहिए, अपितु जब तक सफलता साकार रूप में सामने न आ जाए तब तक दृढिप्रतिज्ञभाव से प्रयास जारी रखना चाहिए। यदि प्रयास के बाद भी सफलता नहीं मिलती है, तो सूक्ष्मप्रतिज्ञभाव से प्रयास जारी रखना चाहिए। यदि प्रयास के बाद भी सफलता नहीं मिलती है, तो सूक्ष्मावलोकन करना चाहिए कि हमारे प्रयास में कहा क्या कमी या दोष है।

प्रयासों की यह विविधता मुख्य रूप से व्यक्ति की अभिरूचि से प्रभावित होती है, क्योंकि जिस कार्य के प्रति व्यक्ति की उत्कट अभिरूचि होती है, प्रायः वह उसके प्रति लक्ष्य प्राप्ति हेतु मानसिक रूप से जुड़ जाता है ओर मन चूँकि सभी इन्द्रियों का नियामक है, अतः उस लक्ष्य के प्रति मन की एकाग्रता के साथ - साथ सम्पूर्ण इन्द्रियाँ भी विधेयात्मक प्रवृत्तिवाली हो जाती हैं और व्यक्ति शीघ्र ही अपनी मंजिल को प्रापत करके शीतल - मंद - सुगन्ध ऱ समीर का सुखद आनन्द लेने लगता है।

मानवमात्र के सर्वांगीण विकास का हेतु मानकर परिश्रमपूर्वक अध्ययन अध्यापक में लगा रहात है। अन्यथा अभिरूचि के अभाव में वह अपने ज्ञान का सही कार्यो में उपयोग नहीं कर पाता है, जैसा कि विद्यालयों एवं महाविद्यालयों तक के शिक्षकों में प्राय देखने को मिलता है।

अतः उपर्युक्त तथ्य को ध्यान में रखते हुए इसके द्वारा यह परिक्षण किया जाता है कि, वास्तव में अभ्ययी मनं एवं मस्तिष्क से शिक्षा-जगत से जुड़ना चाहिए। शिक्षा के प्रति इसकी सकारात्मक अभिवृत्ती हो ओर इसके विचार शिक्षा-जगत को समुन्न बना सकें। क्योंकि शिक्षा ही एक ऐसा क्षेत्र है, यहाँ शिक्षक से उन समस्त मानवीय गुणों की अपेक्षा की जाती है, जो व्यक्ति के सर्वांगीण विकास में सहायक होते हैं।

कभी - कभी देखा जाता है कि ऐसे भी व्यक्ति जो अपेक्षाकृत अधिक योग्य होते हैं, परंतु उस दिशा मं अभिरूचि न रखने के कारण सफल नहीं हो पाते, जबकि कभी-कभी मन्दबुध्दि का व्यक्ति भी उस दिशा विशेष में अपनी अभिरूचि से नियन्त्रित प्रयासों के परिणाम स्वरूप सफलता को हासिल कर लेता है। शिक्षण कार्य में एक शिक्षक की सफलता मात्र उसकी वैषयिक - महारत पर ही आधारित नहीं होती है, अवितु शिक्षण के प्रति उसकी विधेयात्मक अभिरूचि एवं अभिवृत्ती होनी चाहिए , तथी शिक्षा उसके जीवन के लिए उपयोगी एवं मूल्यवान होती है तथा व्यक्ति शिक्षा को

http://www